डॉ.बी.एस.त्यागी

14, अंकित विहार,
पचैण्ड़ा मार्ग
मुजफ्फरनगर 251 1
मो. 9456669443

# शहर आते आते

यह तो उसे भी याद नहीं कब इमामुद्दीन से मामूद्दीन और फिर मामू तांगे वाला बन गया। अब्बा के मरने के बाद तो उसने भी कुछ नहीं सोचा अपने घोड़े और तांगे के सिवाय। सुबह घोड़े को तैयार करना, तांगे में जोतना और उसके खाने-पीने का पूरा खयाल रखना। तांगे के पहियों में तेल डालना और गद्दी को ठीक-ठाक रखना और दूसरी साज़-सफाई। या कहा जा सकता था कि उसका जीवन तांगे का पर्याय बन गया था। यही उसकी दुनिया थी। इस पर बैठ कर ही अपने घर, गाँव, खेत-खलिहान और रिश्तेदारों के बारे में सोचता था। कभी-कभी तो लोग हैरान होते उसे घोड़े के साथ बड़ी ही तन्मयता से बातचीत करते देख कर। जो थोड़ा बहुत समय बचता उसमें अपने लोगों से मिलता, उनके साथ वक्त बिताता। इस छोटी-सी दुनिया में वह खुश था। सुबह सबसे पहले अड्डे पर अपने तांगे को नीम के पेड़ के नीचे लाकर खड़ा कर देता। जिन लोगों को जल्दी पहुंचना होता, वे मामू के तांगे का ही रूख करते। इसके अलावा जिन लोगों को कुछ मंगवाना होता वे यहां सवेरे ही आ जाते।

मामू, ये चार नुस्खे और एक अर्क की बोतल लानी है, बलबीर ने परचा थमाते हुए कहा।

ठीक है, उसने परचा पकड़ते हुए सिर हिलाया।

अब कैसी तबीयत है लम्बरदार की?

आराम है।

फिक्र मत करो। इन दवाइयों के बाद तो बिल्कुल दुरूस्त हो जाएंगे, मामू ने अपना विश्वास जाहिर करते हुए कहा।

मामू, दो सेब लेते आओगे? सोनवीर ने कहा।

क्या बात कर दी, भाई जान! भला मामू फिर किस काम आयेगा?

ये रक्खो पैसे, अगर कम पड़े तो...।

फिक्र मत करना। पैसे की कोई कमी नहीं, मामू ने पैसे जेब में रखते हुए कहा।

ये सब काम करने में उसे बड़ा ही अच्छा लगता। लोग भी बेहिचक उसे काम बताते और वह बड़ी ही संजीदगी से करता। शाम को उनका सामान देने उनके घर जाता, दो-चार मिनट वहाँ बैठता और उनका सुख-दुख बाँटता। यदि अवसर होता तो जोर से खिलखिलाता।

खुदा का शुक्र है। इन शब्दों के साथ सिर पर हाथ फेरते हुए उठ खड़ा होता।

यदि किसी का सामान नहीं ला पाया तो शाम को उसके घर जाकर उसे वजह जरूर बताता।

भाई जान, आज तुम्हारा काम नहीं हो पाया, कल जरूर...।

कोई बात नहीं।

व्यक्ति जानता था कि अवश्य ही कोई मजबूरी रही होगी। नहीं तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि वह काम करने में आनाकानी करे।

मामू ने चौधरी बलबीर का दिया परचा जेब में रखा। चौधरी ने बता दिया था कि ये सब दवाइयाँ राधे पंसारी के यहाँ मिल जाएंगी और अर्क की बोतल वैद्यनाथ की दुकान से ही लेना। भरोसे की दुकान है। दोनों दुकानों में काफी फासला था। इन जगहों पर आने-जाने में उसका आधा घंटे से भी अधिक वक्त लग जायेगा। फिर सब्जी मंडी के पास में फल की दुकान से सेब लेगा। इस काम को निपटाकर वह पेड़ के नीचे अपने तांगे के पास लौटेगा, फिर रुखी-सूखी रोटी खाकर थोड़ा सुस्तायेगा। पहले बीड़ी में दो चार दम मार लिया करता था लेकिन वैद्य जी के कहने पर छोड़ दी थी। दुपहर बाद सवारियां लेकर चल देगा। शाम को छह-सात बजे वह घर लौटेगा। फिर घोड़े को खुरेरा करेगा और चने का रदावा मिला हरी घास देकर खुद नहाएगा।

चार-छह सवारी हो जाएँ तो चल पड़ूँगा, जमीन पर बैठे मामू ने मन में कहा।

सबसे पहले नुस्खे ही लूंगा। चौधरी के कई एहसान हैं मुझ पर। जब कई महीने अब्बा बीमार रहा तो कई बार देखने आया था और दवा के लिए पैसे भी दिये थे। सोचते-सोचते मामू की आंखें कृतज्ञता से गीली हो गयीं।